आईआईटी, गुवहाटी द्वारा आयोजित UNIKAA 2024 सम्मेलन में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के अभिभाषण का प्रारूप

दिनांक 6 अप्रैल 2024, शनिवार	समय : 5.00 PM	स्थान : आईआईटी, गुवाहाटी

- सम्मानित अतिथि **प्रो. दिगन्त बिश्व शर्मा जी**,
- इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के सलाहकार **डॉ. सुव्रोकमल दत्ता जी**,
- भारतीय ज्ञान प्रणाली केंद्र के प्रमुख **प्रो. यू.एस. दीक्षित जी,**
- आईआईटी, गुवाहाटी के निदेशक **प्रो. राजीव आहूजा जी**,
- आयोजन सचिव **डॉ. ललित मोहन पाण्डे जी**,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण,
- आईआईटी, गुवाहाटी के सम्मानित अधिकारी एवं शिक्षक और विद्यार्थीगण,
- सम्मेलन में भारतीय ज्ञान परंपरा पर मार्गदर्शन करने के आए सभी विशेषज्ञ एवं विद्वानगण,
- मीडिया से आए हमारे मित्रों,
- देवियों और सज्जनों,

आप सभी को मेरा नमस्कार !

भारतीय ज्ञान परंपरा पर आयोजित इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन समारोह में आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। इस कार्यक्रम में मुझे आमंत्रित करने के लिए मैं "आई.आई.टी गुवाहाटी" और संस्थान के "भारतीय ज्ञान प्रणाली केंद्र" को हार्दिक धन्यवाद देना चाहता हूं।

हमारा भारत ज्ञान की भूमि है। इस भूमि की ज्ञान की अविरल धारा ने संपूर्ण जगत को सींचा है। भारतीय ज्ञान परम्परा पुरातन युग से बहुत समृद्ध रहीं है। इसका उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को समाहित करते हुए मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करना था।

जब पूरा विश्व अज्ञान के अंधकार में भटकता था, तब भारत के ऋषि-मुनियों ने उच्चतम ज्ञान का प्रसार कर, मानव को पशुता के आचरण से मुक्त कर, उन्हें श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त संपूर्ण मानव बनाया।

भारत ने विश्व को संस्कृति और सभ्यता दी। जब 5000 साल पहले कई सभ्यताएं केवल वनवासी थीं, तब भारतवर्ष में सिंधु घाटी सभ्यता में हड़प्पा संस्कृति का जन्म हुआ।

विश्व का पहला विश्वविद्यालय तक्षशिला में 700 ईसा पूर्व में स्थापित किया, जिसमें दुनिया भर के 10,500 से अधिक छात्रों ने 60 से अधिक विषयों का अध्ययन किया। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में निर्मित नालंदा विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन भारत की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक था।

मित्रो,

हमारा प्राचीन ज्ञान अपार और अनूठा है। आधुनिक विज्ञान ने जो चीजें खोजी, पिछले 100-200 वर्षों में जो आविष्कार हुए, वह हमारे यहां हजारों वर्षों पूर्व हो चुके हैं।

आज जो हम कम्प्यूटर का उपयोग करते हैं। इस कम्प्यूटर के सॉफ्टवेयर के लिए सबसे उपयुक्त भाषा संस्कृत है, जिसे हमने 4000 वर्ष पहले ही बना ली थी।

भारत ने ही विश्व को देव भाषा संस्कृत दी, जो कि विश्व की सबसे शुद्धतम एवं उपयुक्त भाषा है। संस्कृत सभी यूरोपीय भाषाओं की जननी है। संस्कृत भाषा कि उपयोगिता को सिद्ध करने कि आवश्यकता नहीं है। आज संपूर्ण विश्व में इसकी उपयोगिता को जानने के लिए शोध एवं अनुसंधान किए जा रहे है।

एटोमिक थ्योरी का जनक जॉन डॉल्टन को माना जाता है, लेकिन उनसे पहले लगभग 913 वर्ष पूर्व ऋषि कणाद ने वेदों में लिखे सूत्रों के आधार पर परमाणु सिद्धांत का प्रतिपादन किया था।

भारत की खगोलीय गणना आधुनिक युग से भी काफी विकसित थी। भास्कराचार्य ने खगोलविद स्मार्ट से सैकड़ों वर्ष पहले पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा करने में लगने वाले समय की सही गणना की थी। उन्होंने न्यूटन से लगभग 550 वर्ष पहले ही गुरुत्वावकर्षण का सिद्धांत बता दिया था।

भारत ही गणित शास्त्र का जनक है। भारत के माहन गणितिज्ञ कंक ने ही विश्व को अंक का ज्ञान दिया। शून्य से अनंत तक की अवधारणा दी। बीजगणित, त्रिकोणमिति और कलन कि उत्पत्ति भी भारत से हुई। 11वीं शताब्दी में द्विघात समीकरण श्रीधराचार्य द्वारा बनाए गए थे।

गणित में भारतवर्ष का परचम पुरातन काल से ही लहरा रहा है। "पाई" के मान की गणना सबसे पहले बुधायन ने की थी, और उन्होंने उस अवधारणा को भी समझाया, जिसे पाइथागोरस प्रमेय के रूप में जाना जाता है। स्थान मान प्रणाली, दशमलव प्रणाली भारत में 100 ईसा पूर्व में विकसित की गई थी। वमहान गणितज्ञ आर्यभट्ट ने भी गणित में अमूल्य योगदान दिया है।

वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा है,

"हम भारतीयों के बहुत ऋणी हैं, जिन्होंने हमें गिनना सिखाया, जिसके बिना कोई सार्थक वैज्ञानिक खोज नहीं हो सकती थी।"

मित्रो,

भारत में ज्ञान का एक लंबा इतिहास है, जो गंगा नदी की तरह निरंतर जारी है। वेदों-उपनिषदों से लेकर श्री अरबिंदो तक, ज्ञान सभी शोधों का केंद्र बिंदु रहा है।

भारतीय ज्ञान प्रणालियों की भारतीय संस्कृति, दर्शन और आध्यात्मिकता में एक मजबूत नींव है और यह हजारों वर्षों से विकसित हुई है। आयुर्वेद, योग, वेदांत और वैदिक विज्ञान सहित ये ज्ञान प्रणालियाँ आधुनिक दुनिया में अभी भी उपयोगी हैं।

भारतवर्ष ने विश्व को आयुर्वेद दिया। आयुर्वेद मनुष्यों के लिए ज्ञात चिकित्सा का सबसे पहला स्कूल है। चिकित्सा के जनक चरक ने 2500 साल पहले आयुर्वेद को समेकित किया। आज आयुर्वेद तेजी से हमारी सभ्यता में अपना सर्वोच्च स्थान हासिल कर रहा है। आधुनिक युग में आयुर्वेद का उदाहरण हमने कोरोना महामारी के दौरान देखा।

शल्य चिकित्सा की भी शुरुआत पहले भारत में हुई। मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि प्राचीन भारत के महान चिकित्साशास्त्री सुश्रुत शल्य चिकित्सा के जनक हैं। 2600 साल पहले उन्होंने और अपने समय के स्वास्थ्य वैज्ञानिकों ने सिजेरियन, मोतियाबिंद, कृत्रिम अंग, फ्रैक्चर, मूत्र पथरी और यहां तक कि प्लास्टिक सर्जरी और मस्तिष्क की सर्जरी जैसी जटिल सर्जरी की।

कई ग्रंथों में एनाटॉमी, फिजियोलॉजी, एटियलजि, भ्रूणविज्ञान, पाचन, चयापचय, आनुवंशिकी और प्रतिरक्षा का गहरा ज्ञान भी मिलता है।

योग भारतीय ज्ञान परंपरा का अभिन्न अंग है। योग आंतरिक, शारीरिक और आध्यात्मिक कल्याण के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण है जिसकी जड़ें प्राचीन भारत में हैं। इसमें आसन, प्राणायाम और चिंतन जैसे तरीके शामिल हैं, जो तनाव को कम करने, आंतरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और सामान्य हृदयता को बढ़ाने में मददगार साबित हुए हैं।

सिंचाई के लिए सबसे पहला जलाशय और बांध सौराष्ट्र में बनाया गया था। चंद्रगुप्त मौर्य के समय रैवतका की पहाड़ियों पर 'सुदर्शन' नामक एक सुंदर झील का निर्माण किया गया था, जो संपूर्ण विश्व के लिए एक उदहारण रहा।

भारतीय ज्ञान परंपरा में "मंदिर वास्तु शैली" भी प्रमुख स्थान रखती है। भारतीय मंदिर वास्तुकला भी आधुनिक युग के लिए किसी चमत्कार से कम नहीं है। भारत के कई मंदिर वास्तुशिल्प महत्वाकांक्षा के आश्चर्यजनक उदहारण हैं, और अधिकांश जटिल नक्काशी और प्रतीकों से सजाए गए हैं।

द्रविड़ वास्तुकला और शिव को समर्पित ऐरावतेश्वर मंदिर एवं बृहदेश्वर मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर जैसे कई उदहारण हमारे भारतवर्ष कि ज्ञान भूमि के अलंकरण है, जो आधुनिक युग के विज्ञान से भी परे है और समस्त वास्तुकला प्रेमियों के लिए शोध का विषय है।

आधुनिक युग में डिप्रेशन, स्ट्रेस, इंजाइटी व मेंटल ट्रॉमा जैसे शब्दों का प्रयोग अत्याधिक मात्रा में बढ़ गया हैं, आज की युवा पीढ़ी पाश्चात्य जीवनशैली को अपनाने के कारण इन शब्दों को भी अपने जीवन में समाहित कर चुकी हैं। परंतु पुरातन भारत में इस प्रकार की मनोवृत्ति देखने को नहीं मिलती, इसका कारण रहा भारतीय दर्शन।

भारतीय सभ्यता ने ज्ञान को बहुत महत्व दिया है, जैसा कि इसके आश्चर्यजनक रूप से विशाल बौद्धिक ग्रंथों, दुनिया में पांडुलिपियों के सबसे बड़े संग्रह और विभिन्न प्रकार के ग्रंथों, विचारकों और विद्यालयों की अच्छी तरह से प्रलेखित विरासत से पता चलता है। लेकिन ऐसे कई भारतीय ज्ञान हैं, जो लिपिबद्ध न होने के कारण अज्ञात हैं। क्योंकि प्राचीन भारत में ज्ञान का आदान-प्रदान लिखकर या पढ़कर नहीं होते थे, बल्कि बोलकर और सुनकर होते थे। इसके अलावा भारत में आए आक्रमणकारियों द्वारा कई पांडुलिपियों, ग्रंथों और धरोहरों को नष्ट कर दिए गए, वहीं कुछ संरक्षण के अभाव में नष्ट हो गए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा की बहुविषयी शिक्षा, सम्पूर्ण विकास, जड़ से जग तक, मानव से मानवता तक की बात समावेशित की गई है। यह शिक्षा नीति पूरी भारतीय शिक्षा प्रणाली को उन्नत करने के लिए है, जिसमें शिक्षार्थी और शिक्षक दोनों शामिल हैं।

इसमें छात्रों के साथ-साथ विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षण संस्थाओं के शिक्षकों को ज्ञान परंपरा की जड़ों से जोड़ने की पहल की गई है। इसमें ऐसी शिक्षा प्रणाली प्रदान करने की दृष्टि है, जो युवाओं को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान कर उन्हें भारत को वैश्विक महाशक्ति बनाने के लिए प्रेरित करेगा।

मुझे खुशी है कि आईआईटी, गुवाहाटी भारत की समृद्ध ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित और बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इस कड़ी में इस अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन के लिए मैं संस्थान को धन्यवाद देता हूं।

इसके अलावा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान प्रणाली को बढ़ावा देने में राज्य के विश्वविद्यालय प्रयास में जुटे हुए हैं।

मित्रो,

प्राचीन काल से ही हमारा देश उच्च मानवीय मूल्यों एवं विशिष्ट ज्ञान और वैज्ञानिक परंपराओं का देश रहा है।

"अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

महाउपनिषद के इस सिद्धांत के आधार पर भारत दुनिया को एक परिवार मानता है। यह हमारे देश की संस्कृति रही है। लेकिन पाश्चात्य सभ्यता की आपाधापी में हम यह समझने लगे कि यह सभ्यता भौतिकवाद पर टिकी है। वास्तव में हमारी सभ्यता और संस्कृति ज्ञान और आध्यात्म पर आधारित है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली आज के परिदृश्य में भी लागू है, जो तनाव प्रबंधन, स्थिरता आदि जैसे मुद्दों से निपटने के लिए व्यावहारिक सुझाव देती है। यह ज्ञान का एक विशाल भंडार प्रदान करती है, जिसका उपयोग लोगों, समुदायों और मानवता को आगे बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

यही कारण है कि अब पश्चिमी सभ्यता वाले देश भारतीय संस्कृति, सभ्यता और परंपराओं को अपनाने और जानने पर जोर देने लगे हैं। वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों और यहां की जीवन शैली को जानने के लिए अपने यहां कई विभाग से लेकर शोध संस्थाओं की स्थापना करने लगे हैं।

हमारे भारतीय ज्ञान परंपरा ने विश्व को अनेक प्रकार से योगदान देकर लाभान्वित किया है। खासतौर पर, भारत ने एशिया क्षेत्र को प्रभावित किया है। बौद्ध धर्म की उत्पत्ति भी भारत से हुई और इसे चीन, जापान, थाईलैंड, और श्रीलंका जैसे देशों तक पहुंचाया गया।

यह हर्ष का विषय है कि “अनरैवलिंग इंडियन नोलेज एक्रोस एशिया (UNIKAA 2024)” शीर्षक पर आयोजित इस भव्य अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्देश्य ज्ञान की दृष्टि से भारत और अन्य एशियाई देशों के बीच संबंध एवं समन्वय को समझना और उसे और मजबूत करना है।

मैं समझता हूं यह मंच विशेषज्ञों को महान भारतीय परंपराओं को समझने और उन्हें सुरक्षित रखने का एक अवसर प्रदान करेगा, जो हमारी युवा पीढ़ी के लिए महत्वपूर्ण है।

मुझे बताया गया है कि इस तीन दिवसीय सम्मेलन के दौरान भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़े गणित शास्त्र, खगोल शास्त्र, दर्शन शास्त्र, चिकित्सा एवं आयुर्वेद, योग, साहित्य, कला, प्रबंधन कौशल, पुरातत्व एवं ऐतिहासिक धरोहरों के संरक्षण आदि विषयों पर सार्थक चर्चा की गई है।

मुझे विश्वास है कि इन सार्थक चर्चाओं से भारतीय ज्ञान के आलोक में नए-नए विचार सामने आएंगे, जिससे एशियाई देश ही नहीं, बल्कि पूरा विश्व प्रकाशमान होगा।

आशा करता हूं कि आप सभी भारत वर्ष की इस अनमोल धरोहर, ज्ञान को संवर्धित करके रखेंगे, जिससे कि विश्व का कल्याण हो सके और भारत फिर से "विश्व गुरु" का दर्जा हासिल कर सके।

पुनः इस सम्मेलन के आयोजन के लिए आप सभी को धन्यवाद तथा इसकी सफलता के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद !

जय हिन्द !